अरेबियन नाइट्स

जादुई घोड़ा



वैल बिरो

प्राचीन फारस में त्यौहार के दिनों में, लोगों के लिए शाह के महल में अपने नवीनतम आविष्कारों का प्रदर्शन करना एक रिवाज था. ऐसे ही एक त्यौहार पर एक अजनबी पीतल के बने एक शानदार घोड़े के साथ शाह के सामने आया.

"यह मेरा जादुई घोड़ा है," अजनबी ने शेखी बघारी. "वह पलक झपकते ही कहीं भी उड़ सकता है! कृपया, उसका प्रदर्शन करने की मुझे अनुमति दें."





फिर वह काठी पर चढ़ा और उसने घोड़े की गर्दन पर लगी एक खूंटी घुमाई. घोड़ा हवा में उछला और तेजी से उसे लगभग दो मील दूर एक पहाड़ी की चोटी पर ले गया. एक मिनट से भी कम समय बीता था कि वे पहाड़ी की चोटी पर से एक पेड़ से ताड़ की एक शाखा लेकर वापिस लौटे.

शाह उसे देखकर बहुत प्रभावित हुआ. "यह वास्तव में एक जादुई घोड़ा है!" उसने कहा. "मैं इसे खरीदना चाहता हूँ. तुम उसकी कीमत बताओ!"

चालाक अजनबी को लगा कि वो उसके लिए सौदा करने का एक अच्छा मौका था.

"महाराज," उसने शुरू किया, "मैंने अपनी प्यारी बेटी को इस अद्भुत घोड़े के बदले में देकर एक बहुत बड़ी कीमत चुकाई है. इसलिए मैं बड़ी अनिच्छा से इसे आपके लिए छोड़ दूंगा लेकिन केवल आपकी अपनी बेटी से शादी करने के बाद."



यह अपमानजनक मांग सुनकर शाह का बेटा राजकुमार फिरोज बहुत गुस्सा हुआ. "पिताजी, निश्चित रूप से आप इस शर्मनाक प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकते!"

"मेरे बेटे, निर्णय लेने से पहले, मैं चाहता हूं कि तुम खुद घोड़े की शक्ति का परीक्षण करो."



इससे पहले कि अजनबी विरोध कर पाता, राजकुमार ने काठी पर छलांग लगाई और खूंटी को घुमाया, जैसा उसने अजनबी को करते हुए देखा था. घोड़ा ऊपर और ऊपर की ओर उड़ा, और कुछ ही क्षणों में न तो घोड़ा दिखाई दिया और न ही राजकुमार. और न ही वे वापस लौटे.



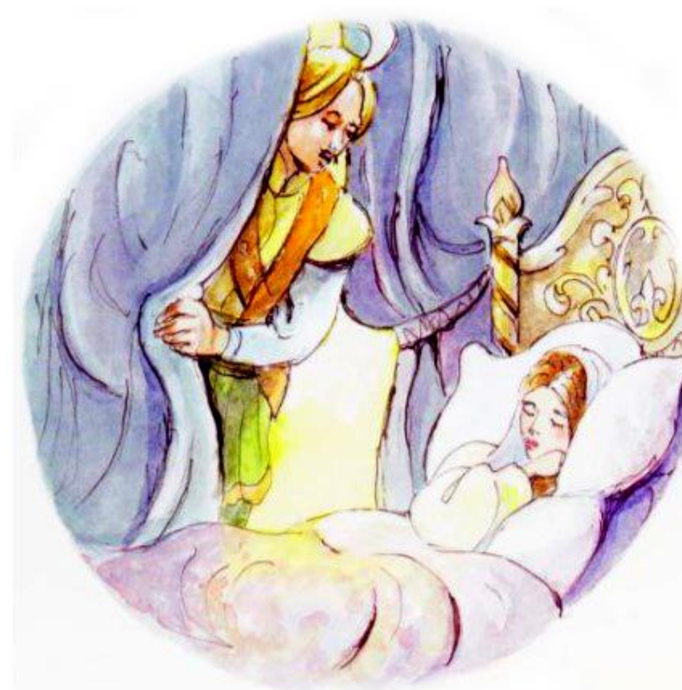
उससे शाह बहुत क्रोधित हुआ, और उसने राजकुमार के सुरक्षित वापस आने तक अजनबी को कैद करने का आदेश दिया.

इस बीच, घोड़ा राजकुमार को इतनी ऊंचाई पर ले जाया गया कि वह नीचे की दुनिया को पूरी तरह से देख तक नहीं पाया. उसने घोड़े को वापस उड़ाने की कोशिश की, लेकिन जब उसने खूँटी घुमाई तो कुछ भी नहीं हुआ.

घोड़े को बेचैनी से खोजते हुए, उसे आखिरकार घोड़े के कान के पीछे एक दूसरी खूँटी मिली. उसने उसे घुमाया और घोड़ा नीचे उतरने लगा. जब वे एक अपरिचित महल की संगमरमर की छत पर उतरे, तब तक अंधेरा हो चुका था.

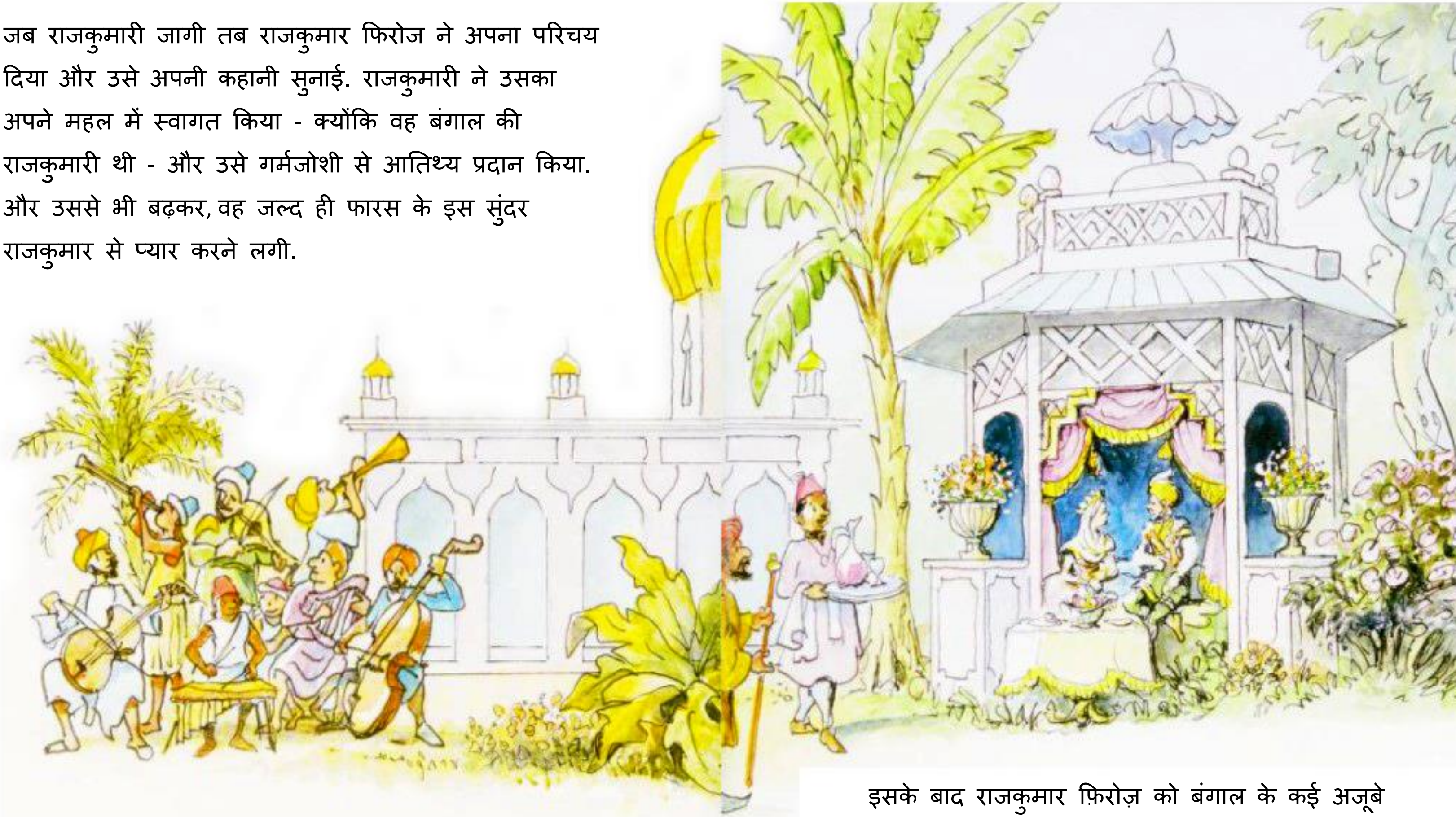


राजकुमार फिरोज सावधानी से कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरा. वहां एक दालान के पास कुछ सशस्त्र पहरेदार जोर-जोर से खर्राटे ले रहे थे, और वो एक सुंदर कक्ष में पहुँचा जहाँ उसे एक पर्दा लगा हुआ बिस्तर मिला.



पर्दा हटाकर, उसने एक ऐसी असाधारण सुंदरता वाली सोती हुई राजकुमारी को देखा कि उसे पहली नज़र में ही उससे प्यार हो गया.

जब राजकुमारी जागी तब राजकुमार फिरोज ने अपना परिचय दिया और उसे अपनी कहानी सुनाई. राजकुमारी ने उसका अपने महल में स्वागत किया - क्योंकि वह बंगाल की राजकुमारी थी - और उसे गर्मजोशी से आतिथ्य प्रदान किया. और उससे भी बढ़कर, वह जल्द ही फारस के इस सुंदर राजकुमार से प्यार करने लगी.

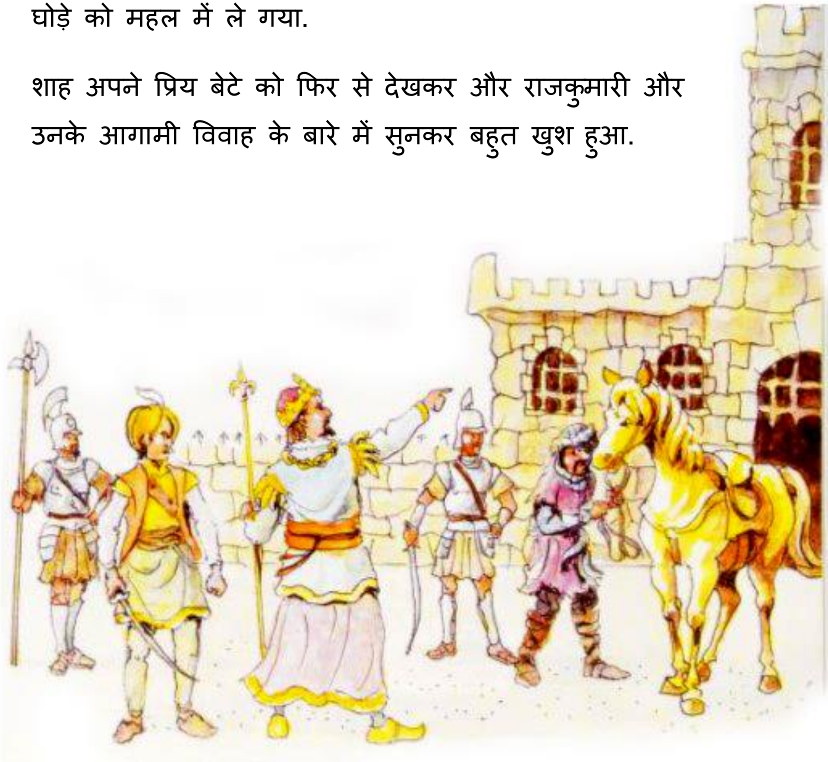


इसलिए उन्होंने एक दूसरे के प्रति अपने प्यार का इज़हार किया और - सबसे पहले उसके पिता, बंगाल के सुल्तान की अनुमति प्राप्त करने के बाद - विवाह करने का इरादा किया.

इसके बाद राजकुमार फ़िरोज़ को बंगाल के कई अजूबे दिखाए गए और उसने राजकुमारी द्वारा उसके मनोरंजन के लिए आयोजित भोज और संगीत समारोहों का आनंद लिया. राजकुमार फ़िरोज़ ने घोषणा की कि अब जादुई घोड़े पर सवार होकर अपनी मंगेतर को वापस फारस ले जाने का समय आ गया था.

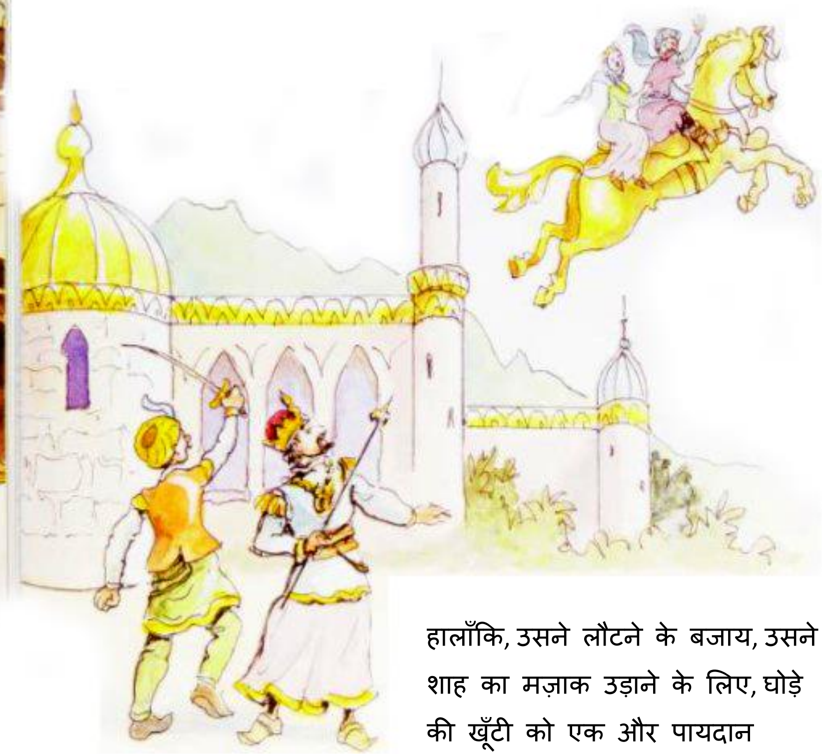
वे आसमान से उड़े और अंततः फारस में शाह के एक मंडप में उतरे जो शहर से बहुत दूर नहीं था. राजकुमारी को आराम करने के लिए वहीं छोड़कर, राजकुमार अपने जादुई घोड़े को महल में ले गया.

शाह अपने प्रिय बेटे को फिर से देखकर और राजकुमारी और उनके आगामी विवाह के बारे में सुनकर बहुत खुश हुआ.



अपने वचन के अनुसार, शाह ने अजनबी को जेल से रिहा कर दिया. "मैं तुम्हारे साथ कोई सौदा नहीं करूँगा," उसने अजनबी से कहा. "अपना पीतल का घोड़ा ले लो और फिर कभी फारस वापस मत आना!"

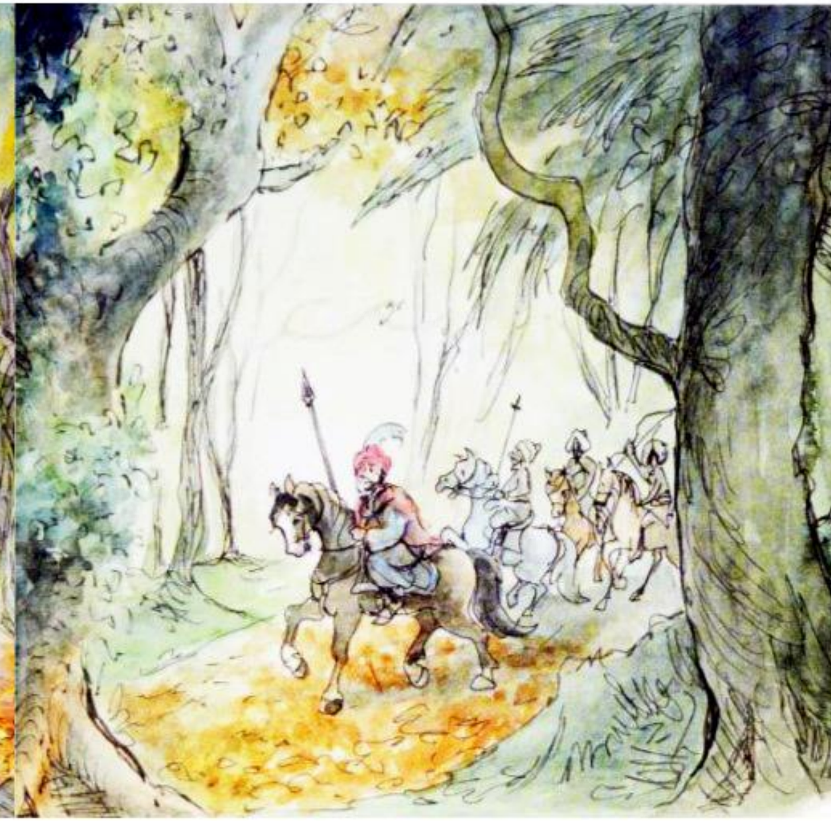
लेकिन अजनबी अपने कारावास का बदला लेना चाहता था! वो खुद काठी पर बैठा और उसने अपने घोड़े को मंडप तक उड़ाया जहाँ राजकुमारी आराम कर रही थी, और उसने यह दिखावा किया कि वह शाह के आदेश पर राजकुमारी को महल में ले जाने आया था.



हालाँकि, उसने लौटने के बजाय, उसने शाह का मज़ाक उड़ाने के लिए, घोड़े की खूँटी को एक और पायदान घुमाया, और फिर वो भयभीत राजकुमारी को लेकर उड़ गया.



वह राजकुमारी को कश्मीर तक ले गया, जहाँ वे एक बड़े जंगल में जाकर उतरे. खतरे का एहसास होने पर, राजकुमारी चीखती और रोती रही, फिर किस्मत से, एक शिकारी दल ने उसकी आवाज़ सुनी.



शिकारी दल का नेतृत्व कश्मीर के महाराजा खुद कर रहे थे. जब राजकुमारी ने उन्हें बताया कि वह वहाँ कैसे पहुँची, तो महाराजा ने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे अजनबी को पकड़ लें और उसे कालकोठरी में बंद कर दें.

लेकिन राजकुमारी को एक खतरे से बची, लेकिन वह बिचारी एक दूसरे खतरे में फंस गई! एक बार जब वह उसे और पीतल के घोड़े को अपने महल में वापस ले आया, तो बूढ़े महाराजा ने उससे खुद शादी करने का इरादा बनाया, चाहे राजकुमारी उसे पसंद करे या नहीं.

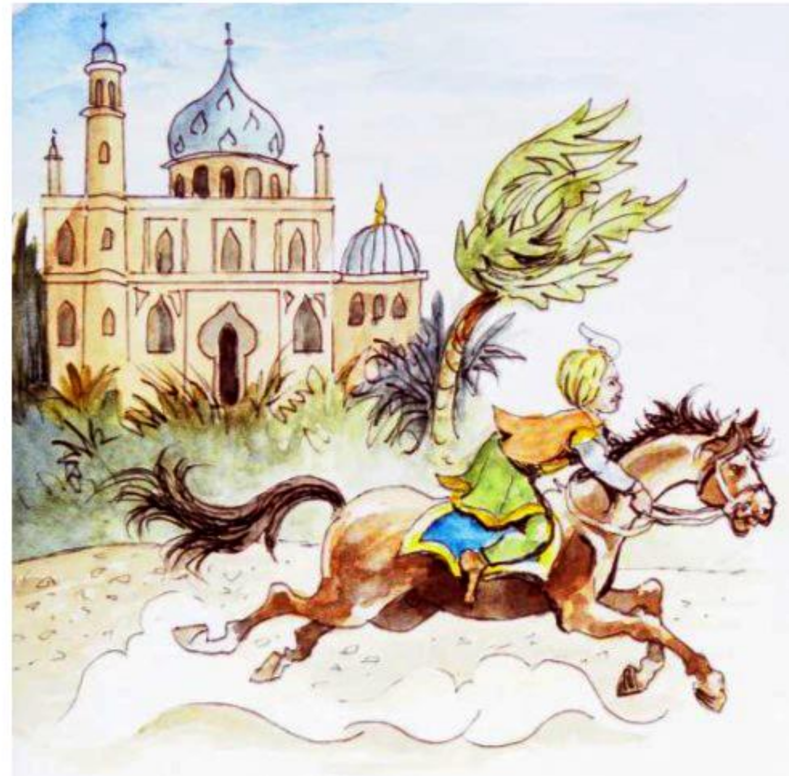




इस भयानक संभावना से बचने के लिए, राजकुमारी ने एक हताश करने वाला कदम उठाया और नाटक किया कि वह पूरी तरह से पागल हो गई थी.



महाराजा उसके प्रदर्शन से इतने आश्वस्त थे कि उन्होंने देश के सबसे बुद्धिमान डॉक्टरों को महल में बुलाकर उसे ठीक करने के लिए कहा.



इस बीच, राजकुमार फिरोज अपनी अपहृत दुल्हन की तलाश में दूर-दूर तक बेताबी से भटक रहा था. एक दिन अपनी यात्रा के दौरान, उसने एक विदेशी राजकुमारी के बारे में एक कहानी सुनी जो कश्मीर में पागल हो गई थी. यह मानते हुए कि यह वही होगी और वह केवल पागलपन का नाटक कर रही होगी - वो कश्मीर के लिए रवाना हुआ, और उसने रास्ते में उसने राजकुमारी बचाने की योजना बनाई



खुद को एक डॉक्टर के रूप में पेश करते हुए, राजकुमार सीधे महाराजा से मिलने गया.

"राजकुमारी उस घोड़े के जादू से अभिभूत हो गई है जो उसे यहाँ लाया था," नए डॉक्टर ने कहा. "मैं ही उसे ठीक कर सकता हूँ. राजकुमारी को घोड़े पर बैठाकर बाहर ले आओ, और बाकी सब मेरे ऊपर छोड़ दो." पूरा दरबार उत्सुकता से देख रहा था कि कैसे नकली डॉक्टर ने पहले घोड़े के चारों ओर आग के कटोरे रखे, और फिर रहस्यमयी मंत्रों का उच्चारण करते हुए उसने उनके चारों ओर नृत्य किया.





राजकुमारी ने तुरंत 'डॉक्टर' को अपने प्रिय राजकुमार के रूप में पहचान लिया, और जान गई कि वह उसे बचाने आया था. उसने देखा कि वह लपटों पर धूप डाल रहा था, और जब घने, सुगंधित धुएं ने उन्हें लगभग छिपा दिया, तो राजकुमार पीछे से घोड़े की काठी पर चढ़ा और उसने खूँटी को घुमाया. घोड़ा तुरंत महल के ऊपर उड़ गया और वे वापस फारस चले गए.

शाह ने उन्हें वापस आते देखकर खुशी मनाई, और तुरंत एक शानदार शादी की तैयारी का आदेश दिया. उन्होंने यह भी आदेश दिया कि जादुई पीतल के घोड़े को अब से महल के खजाने में रखा जाए, ताकि उनके बेटे के महान साहसिक कार्य की याद बरकरार रहे और यह सुनिश्चित किया जा सके कि जादुई घोड़े का इस्तेमाल फिर कभी किसी बुरे काम के लिए नहीं किया जा सके.

